Aaqa Ka Pyara Kaun ? (Hindi)

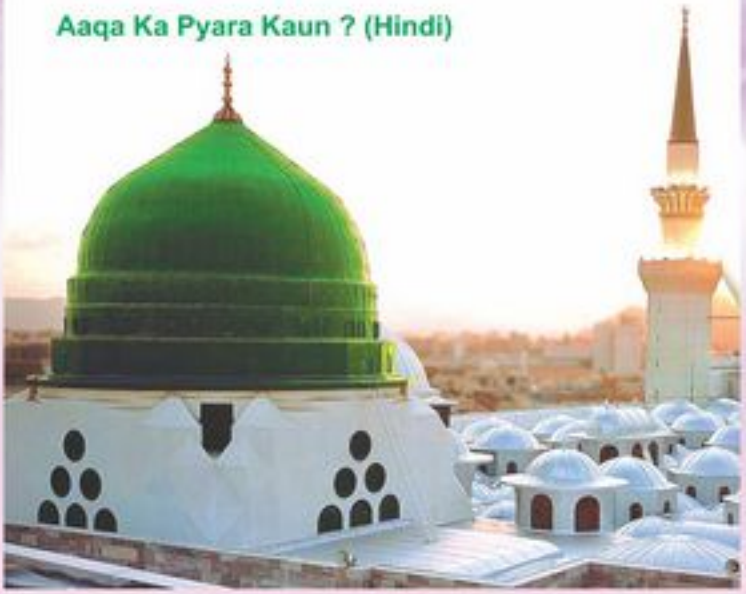

صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

आक़ा का प्यारा कौन ?

(मअ़ 16 हिकायात)

DAWAT-E-ISLAMI

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

क़िताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा** । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "(**आक़ा का प्यारा कौन ?**)"

दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / یٖ	इ = اِ	ऐ = ـَـے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9327776311 • E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : اَوْلَى النَّاسِ بِىْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَكْثَرُهُمْ عَلَىَّ صَلَاةً **या 'नी** बरोज़े क़ियामत लोगों में मेरे **क़रीब तर** वोह होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर **ज़ियादा दुरूदे पाक** पढ़े होंगे ।

(ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء في فضل الصلاة علی النبی ﷺ، ۲/۲۷، حدیث:۴۸۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : शफ़ाअ़त और मुख़्तलिफ़ भलाइयों का ज़ियादा ह़क़दार वोह होगा जो दुन्या में दुरूद की कसरत करेगा क्यूं कि दुरूद की कसरत से येह मा'लूम होता है कि इन्सान के अ़क़ीदे में पुख़्तगी, निय्यत अच्छी और मह़ब्बत सच्ची है और जिस में येह सारी ख़स्लतें हों तो वोही क़ुर्ब का ज़ियादा ह़क़दार है । **(فیض القدیر، حرف الهمزة، ۲/۵۶۰، تحت الحدیث:۲۲۴۹، ملخصاً)** जब कि **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : क़ियामत में सब से (ज़ियादा) आराम में वोह होगा जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ रहे और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब होने का ज़रीआ़ दुरूद शरीफ़ की कसरत है । इस से मा'लूम हुवा कि दुरूद शरीफ़

www.dawateislami.net

बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत के दूल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 100)

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 1 दीदार कैसे होगा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कमाल द-रजे की महब्बत रखते थे। एक रोज़ इस क़दर ग़मगीन और रन्जीदा ह़ाज़िर हुए कि चेहरे का रंग बदला हुवा था, रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : आज तुम्हारा रंग क्यूं बदला हुवा है ? अ़र्ज़ की : न मुझे कोई बीमारी है और न दर्द सिवाए इस के कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सामने नहीं होते तो इन्तिहा द-रजे की वह़शत व परेशानी हो जाती है यहां तक कि मैं आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाऊं, फिर जब आख़िरत को याद करता हूं तो येह अन्देशा होता है कि वहां मैं किस त़रह़ दीदार पा सकूंगा ? आप तो अम्बियाए किराम के साथ आ'ला तरीन मक़ाम में होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने करम से मुझे जन्नत भी दी तो उस मक़ामे आ़ली तक रसाई कहां ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

www.dawateislami.net

﴿وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴾ (پ٥، النساء:٦٩)

﴾**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग येह क्या ही अच्छे साथी हैं ।﴿

और उन्हें तस्कीन दी गई कि मन्ज़िलों में फ़र्क़ के बा वुजूद फ़रमां बरदारों को बारयाबी और मइय्यत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया जाएगा ।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 174) (تفسیر خازن ١/٤٠٠، پ٥، النساء، زیرِ آیت ٦٩)

हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं
जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे ख़ुदा दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 120)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक़ामे रसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वोह मक़ामो मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया है और ऐसे औसाफ़े जमीला से नवाज़ा है जिन का कमा ह़क़्क़ुहू बयान हम जैसों के लिये मुम्किन नहीं ।

"मदीना" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से शाने रसूल के बारे में 5 आयाते मुबा-रका

क़ुरआने मजीद में है :

www.dawateislami.net

(1) مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ (پ٥، النساء: ٨٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना ।

(2) وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ١٧، الانبياء: ١٠٧)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये ।

(3) اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ﴿۸﴾ (پ٢٦، الفتح: ٨)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ।

(4) لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ (پ ٤، ال عمران: ١٦٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** का बड़ा एह़सान हुवा मुसल्मानों पर कि इन में इन्हीं में से एक रसूल भेजा ।

(5) وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿۵﴾ (پ٣٠، الضحى: ٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुन्या को पैदा न करता

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : وَعِزَّتِی وَجَلَالِی لَوْلَاكَ مَا خَلَقْتُ الْجَنَّةَ لَوْلَاكَ مَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا या'नी मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! ऐ मह़बूब ! अगर तुम न होते तो मैं जन्नत पैदा न करता, अगर तुम न होते तो मैं दुन्या पैदा न करता । (فردوس الاخبار، ٢/٤٥٨، حديث: ٨٠٩٥)

www.dawateislami.net

सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे !

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن बारगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ गुज़ार होते हैं :

सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे
बाग़े ख़लील का गुले ज़ैबा कहूं तुझे
अल्लाह रे तेरे जिस्मे मुनव्वर की ताबिशें
ऐ जाने जां मैं जाने तजल्ला कहूं तुझे
तेरे तो वस्फ़ "ऐबे तनाही" से हैं बरी
हैरां हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे
कह लेगी सब कुछ उन के सना ख़्वां की ख़ामुशी
चुप हो रहा है कह के मैं क्या क्या कहूं तुझे

लेकिन रज़ा ने ख़त्म सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 174)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोह़बत व क़ुर्बत के मुश्ताक़ रहते

ऐसे बुलन्दो बाला मर्तबए अ़ज़मत पर फ़ाइज़ होने वाले रह़मते कौनैन, हम ग़रीबों के दिल के चैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत व क़ुर्बत और सोह़बते बा ब-र-कत ऐसी अ़ज़ीम तरीन सआ़दत, ने'मत और इबादत है जिस के लिये सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बहुत मुश्ताक़ रहते थे, रुख़े मुस्त़फ़ा की ज़ियारत के तुफ़ैल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ऐसी अ़ज़मत नसीब हुई कि रब तआ़ला ने इन्हें अपनी रिज़ा का मुज़्दा इन अल्फ़ाज़ में सुनाया :

رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ
(پ۱۱،التوبہ:۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी हैं।

www.dawateislami.net

और म-दनी ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें बेहतरीन लोग और हिदायत के सितारे क़रार दिया चुनान्चे इर्शाद हुवा : اَلَاوَاِنَّ اَصْحَابِیْ خِیَارُکُمْ فَاَکْرِمُوْهُمْ ख़बरदार ! मेरे सह़ाबा तुम सब में बेहतरीन हैं इन की इ़ज़्ज़त करो । (المعجم الأوسط، ٥/ ٦، حديث:٦٤٠٥)

और फ़रमाया : اَصْحَابِیْ کَالنُّجُوْمِ فَبِاَیِّهِمْ اِقْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ (या'नी) मेरे सह़ाबा सितारों की त़रह़ हैं इन में से जिस के पीछे चलोगे राह पाओगे ।

(مشكوة المصابيح ، كتاب المناقب ، باب مناقب الصحابة، ٢/ ٤١٦، حديث:٦٠١٨)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे ह़ुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 2 इमारत गिरा दी

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पाने के लिये कोशां रहते और हर ऐसे काम से बचने की कोशिश करते जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ना पसन्द हो चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक दिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले गए तो एक **बुलन्द इमारत** मुला-ह़ज़ा की, इस्तिफ़्सार फ़रमाया : येह किस की है ? अ़र्ज़ की गई : येह फ़ुलां अन्सारी सह़ाबी की है । येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए । जब उस इमारत के मालिक ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को लोगों की

www.dawateislami.net

मौजू-दगी में सलाम अ़र्ज़ किया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से ए'राज़ किया, उन्हों ने येह अ़मल कई मर्तबा किया, ह़त्ता कि अपने बारे में नाराज़ी का इ़ल्म हो गया, उन्हों ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से कहा : **वल्लाह !** मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाराज़ पाता हूं, वोह कहने लगे : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले जा रहे थे तो तुम्हारी इ़मारत देखी, येह सुन कर वोह लौटे और इ़मारत ढा कर ज़मीन बोस कर दी ।

(ابوداؤد ، کتاب الادب ، باب ما جاء فی البناء ، ٤ / ٤٦٠ ، حدیث : ٥٢٣٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

काएनात की बेहतरीन ख़ुश्बू

अगर रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूरतन कहीं तशरीफ़ ले जाते तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़िराक़ में बेचैन हो जाते और मुअ़त्तरो मुअ़म्बर फ़ज़ाओं से पूछ पूछ कर रह़मते आ़-लमियां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तलाश करने में काम्याब हो जाते, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : रात के वक़्त **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आ'ला महक से तलाश किया जाता था । (سنن الدارمی ، باب فی حسن النبی ، ١ / ٤٥ ، حدیث : ٦٥) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : बि इ़ज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस रास्ते से भी गुज़र जाते तो बा'द में गुज़रने वाला आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक पसीने की आ'ला महक की वज्ह से पहचान जाता था कि यहां से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुज़रे हैं । (سنن الدارمی ، باب فی حسن النبی ، ١/ ٤٥ ، حدیث : ٦٦)

www.dawateislami.net

गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर
रह गई सारी ज़मीं अम्बरे सारा हो कर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इनायतें

दूसरी त़रफ़ म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपने जां निसार व वफ़ादार सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बतो उल्फ़त के इज़्हार और उन को नवाज़ने में कमी नहीं की, चुनान्चे फ़रमाया : हर नबी के दो दो वज़ीर हैं, दो आस्मान में और दो ज़मीन में। आस्मान में मेरे दो वज़ीर जिब्रईल व मीकाईल हैं और ज़मीन में मेरे दो वज़ीर अबू बक्र व उ़मर हैं। (ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر و عمرکلیهما، ٥/٣٨٢، حدیث: ٣٧٠٠) एक मक़ाम पर फ़रमाया : हर नबी का एक रफ़ीक़ होता है और जन्नत में मेरे रफ़ीक़ उ़स्मान हैं। (ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان، ٥/٣٩٠، حدیث: ٣٧١٨) नीज़ फ़रमाया : اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَعَلِيٌّ بَابُهَا या'नी मैं इ़ल्म का शहर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं। (مُستَدرَك، کتاب معرفة الصحابة، باب انا مدینة العلم، ٤/٩٦، حدیث ٤٦٩٣) ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : **रसूले अकरम**, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दस आदमी जन्नती हैं : अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान, अ़ली, ज़ुबैर, त़ल्ह़ा, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ और सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم)। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ नव अफ़राद के नाम बता कर दसवें पर ख़ामोश हो गए, लोगों ने कहा : ऐ अबुल आ'वर ! (येह इन की कुन्यत थी) हम आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछते हैं कि दसवां कौन है ? फ़रमाया : तुम ने

www.dawateislami.net

मुझे क़सम दी है तो सुनो ! दसवां अबुल आ'वर है ।

(ترمذی ، کتاب المناقب ، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف ، ٥/ ٤١٦ ، حدیث : ٣٧٦٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ग़ज़्वए उहुद में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीर निकाल निकाल कर मुझे अ़त़ा करते रहे और फ़रमाया : तीर चलाओ ! मेरे मां बाप तुम पर फ़िदा । (بخاری ، کتاب المغازی ، باب اذ ھمت ...الخ ، ٣/ ٣٧ ، حدیث : ٤٠٥٥)

जो हम भी वां होते ख़ाके गुलशन लिपट के क़दमों से लेते उतरन
मगर करें क्या नसीब में तो येह ना मुरादी के दिन लिखे थे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ुश ख़बरी

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जहां हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने साथ मौजूदीन को बिशारतों से नवाज़ा वहीं बा'द में आने वाले उम्मतियों को भी महरूम न रखा म-सलन : यतीमों की परवरिश, बेटियों की परवरिश, कम खाना, कम बोलना, यतीम के सर पर हाथ फैरना, बड़ों का अदब जैसे कई आ'माल करने वालों को अपनी रिज़ा की ख़ुश ख़बरी दी तो किसी को जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमा कर अपने क़ुर्ब की नवीद भी सुनाई । ऐसे ही कम अज़ कम **17** मुन्तख़ब आ'माल व फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल मुख़्तसर रिसाला "**आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का प्यारा कौन ?**"[1] आप के सामने है, इसे पढ़िये और अ़मल कर के ब-र-कतें पाइये ।

مدینہ

1 : इस रिसाले का येह नाम शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने रखा है और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के इस्लामी भाई ने शर-ई तफ़्तीश फ़रमाई है ।

www.dawateislami.net

अ़त्तार हमारा है सरे ह़श्र इसे काश !
दस्ते शहे बत़्हा से येही चिट्ठी मिली हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

(1) आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म मुझ से हैं

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : لَیْسَ مِنَّا اِلَّا عَالِمٌ اَوْ مُتَعَلِّمٌ **या'नी** हम से नहीं मगर आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म (दीन)।

(فردوس الاخبار، باب اللام، ۲/۲۱٤، حدیث:۵۳۱۹)

इ़ल्मे दीन सीखने वाले इस्लामी भाइयो ! तुम्हें मुबारक हो कि तुम से सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बड़ा प्यार किया करते हैं, बिला शुबा इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने की बड़ी अहम्मिय्यत है और इस के लिये ख़ास ताकीद की गई है, चुनान्चे

पांचवां न बन कि हलाक हो जाएगा

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : اُغْدُ عَالِمًا اَوْ مُتَعَلِّمًا اَوْ مُسْتَمِعًا اَوْ مُحِبًّا وَلَا تَکُنِ

www.dawateislami.net

الْخَامِسَةَ فَتَهْلِكَ या'नी आ़लिम बन या मु-तअ़ल्लिम, या इ़ल्मी गुफ़्त-गू सुनने वाला या इ़ल्म से महब्बत करने वाला बन और पांचवां (या'नी इ़ल्म और आ़लिम से बुग़्ज़ रखने वाला[1]) न बन कि हलाक हो जाएगा।

(معجم اوسط، ٤/٤٩، حدیث:٥١٧١)

हिकायत : 3 इ़ल्म शराफ़त व मर्तबे की कुन्जी है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, वोह अपनी चारपाई पर बैठे हुए थे और उन के इर्द गिर्द क़ुरैश के लोग बैठे हुए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपनी चारपाई पर बिठा लिया तो क़ुरैश के लोग मुझे घूरने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا समझ गए, आप ने फ़रमाया : येह इ़ल्म इसी त़रह़ इ़ज़्ज़त वाले की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा करता है और ग़ुलामों को तख़्त पर बिठा देता है। (الفقیه والمتفقه للخطیب البغدادی، ١/١٣٩، رقم:١١٧)

इ़ल्मे दीन की ब-र-कत से न सिर्फ़ नेकियां कमाने और गुनाहों से बचने का मौक़अ़ मिलता है बल्कि साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा भी हो जाता है, चुनान्चे

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया तो येह उस के **साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा** हो गया। (ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ٤/٢٩٥، حدیث٢٦٥٧)

[1] فیض القدیر، ٢/٢٢، تحت الحدیث:١٢١٣

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : त़ालिबे इल्म से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं जैसे वुज़ू नमाज़ वग़ैरा इ़बादात से, लिहाज़ा इस का मत़लब येह नहीं है कि त़ालिबे इल्म जो गुनाह चाहे करे या मत़लब येह है कि **अल्लाह तआ़ला** निय्यते ख़ैर से इल्म त़लब करने वालों को गुनाहों से बचने और गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करने की तौफ़ीक़ देता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 203)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन दुन्या में इ़ज़्ज़त, आख़िरत में अ़ज़मत और क़ब्र में राह़त का सबब है, चुनान्चे

इल्म क़ब्र में सुकून पहुंचाएगा

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़िश्शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : اِذَا مَاتَ الْعَالِمُ صَوَّرَ اللّٰهُ عِلْمَهٗ فِیْ قَبْرِهٖ يُؤْنِسُهٗ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ या'नी जब किसी आ़लिम का इन्तिक़ाल होता है **अल्लाह** तआ़ला उस के इल्म को उस की क़ब्र में मु-तशक्किल (या'नी कोई शक्ल अ़त़ा) फ़रमा देता है जो क़ियामत तक उसे सुकून पहुंचाता है। (شرح الصدور، باب احاديث الرسول فى عدة امور، ص١٥٨)

इल्म सीखने के लिये छ⁶ ज़रूरी चीज़ें

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का फ़रमान है : ह़ुसूले इल्म के लिये छ⁶ चीज़ें ज़रूरी हैं : ज़िहानत, शौक़ व रग़बत,

www.dawateislami.net

मेहनत व कोशिश, मुनासिब ख़ूराक, उस्ताज़ की सोहबत और त़वील अ़र्से तक इ़ल्म सीखना।

(المستطرف، الباب الرابع: فی العلم والادب، ۱/ ٤١)

ज़मीन व आस्मान वाले इस्तिग़फ़ार करते हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اِنَّ طَالِبَ الْعِلْمِ يَسْتَغْفِرُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ. या'नी ज़मीन व आस्मान की तमाम मख़्लूक़ त़ालिबे इ़ल्म के लिये दुआए मग़्फ़िरत करती है।

(ابن ماجه، المقدمة، فضل العلماء والحث على طلب العلم، ۱/ ١٤٦، حديث: ٢٢٣، ملتقطاً)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : उस से बड़ा मर्तबा किस का होगा जिस के लिये ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ करते हों, येह अपनी ज़ात में मश्ग़ूल है और फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल हैं। (احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب الاول، ۱/ ٢٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) जन्नत में मेरे साथ होगा

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! अगर तुझ से हो सके तो अपनी सुब्ह़ व शाम इस ह़ालत में कर कि तेरे दिल में किसी का कीना न हो, फिर फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! येह मेरी सुन्नत है, जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(ترمذی، کتاب العلم، باب فی الاخذ بالسنة واجتناب البدع، ٤/ ٣٠٩، حديث: ٢٦٨٧)

www.dawateislami.net

सुन्नत को ज़िन्दा करने का मत़लब

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى एक और ह़दीसे पाक के इस हिस्से "**जिस ने मेरी सुन्नतों में से एक सुन्नत को ज़िन्दा किया**" के तह़्त लिखते हैं : सुन्नत को ज़िन्दा करने से मुराद सुन्नत का इ़ल्म ह़ासिल करना, उस पर अ़मल करना, उसे लोगों में फैलाना, उन्हें सुन्नत पर अ़मल की तरग़ीब दिलाना और सुन्नत की मुख़ा-लफ़त करने से बचना है।

(فيض القدير،حرف الهمزة،١٢/٢،تحت الحديث:١١٩٥)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : सुन्नत को ज़िन्दा करने से मुराद अपने क़ौल व अ़मल के ज़रीए़ उस सुन्नत की इशाअ़त व तश्हीर करना है।

(مرقاة المفاتيح،كتاب الايمان،باب الاعتصام بالكتاب والسنة،١/٤١٤،تحت الحديث:١٦٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सुन्नतें अपनाने सुन्नतें फैलाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस ह़दीस में कीने का ज़िक्र भी हुवा, आइये कीने के बारे में चन्द ज़रूरी मा'लूमात ह़ासिल करते हैं, चुनान्चे

कीने की ता'रीफ़

कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से (ग़ैर शर-ई) दुश्मनी और बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा बाक़ी रहे।

(احياء العلوم، كتاب ذم الغضب والحقد والحسد،القول فى معنى الحقد،٣/٢٢٣)

www.dawateislami.net

म-सलन कोई शख़्स ऐसा है जिस का ख़याल आते ही आप को अपने दिल में बोझ सा महसूस होता है, नफ़रत की एक लहर दिलो दिमाग़ में दौड़ जाती है, वोह नज़र आ जाए तो मिलने से कतराते हैं और ज़ुबान, हाथ या किसी भी त़रह़ से उसे नुक़्सान पहुंचाने का मौक़अ़ मिले तो पीछे नहीं रहते तो समझ लीजिये कि आप उस शख़्स से **कीना** रखते हैं और अगर इन में से कोई बात भी नहीं बल्कि वैसे ही किसी से मिलने को जी नहीं चाहता तो येह कीना नहीं कहलाएगा।

कीने का हुक्म

मुसल्मान से बिला वज्हे शर-ई कीना व बुग़्ज़ रखना ह़राम है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 6, स. 526) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ह़क़ बात बताने या अ़दलो इन्साफ़ करने वाले से बुग़्ज़ो कीना रखना ह़राम है। (الحديقة الندية،١/٦٢٩)

मोमिन कीना परवर नहीं होता

महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मोमिन कीना परवर नहीं होता।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثالثة الغضب بالباطل...الخ،١/١٢٤)

मुसा-फ़ह़ा किया करो कीना दूर होगा

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसा-फ़ह़ा किया करो कीना

www.dawateislami.net

दूर होगा और तोहफ़ा दिया करो महब्बत बढ़ेगी और बुग़्ज़ दूर होगा।

(مؤطا امام مالك،كتاب حسن الخلق،باب ماجاء فى المهاجر٢/٤٠٧،حديث:١٧٣١)

लोगों में अफ़्ज़ल तरीन कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : लोगों में अफ़्ज़ल तरीन वोह है जो उन में सब से पाकीज़ा सीने वाला और सब से ज़ियादा ग़ीबत से बचने वाला है।

(المصنف لابن ابی شیبه،كتاب الزهد،حديث ابی قلابه٨/٢٥٤، حديث:٨)

सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : एक शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा कौन सा है ? फ़रमाया : जो कीना परवर रिश्तेदार पर किया जाए।

(مسند احمد بن حنبل،مسند حكيم بن حزام٥/٢٢٨حديث:١٥٣٢٠)

हिकायत : 4 दूर ही से शराइत़ दिखाने वाला नोकर

एक नक-चढ़ा रईस अपने नोकरों को वक़्त बे वक़्त डांटता झाड़ता रहता था जिस की वज्ह से नोकरों के दिल में उस का बुग़्ज़ो कीना बैठ चुका था। उस रईस ने हर नोकर को उस की ज़िम्मेदारियों की तह़रीरी लिस्ट (List) बना कर दी हुई थी अगर कोई नोकर कभी कोई काम छोड़ देता तो रईस उसे वोह लिस्ट दिखा दिखा कर ज़लील करता। एक मर्तबा वोह घुड़ सुवारी का शौक़ पूरा कर के घोड़े से उतर रहा था कि उस का पाउं रिकाब में उलझ गया इसी दौरान घोड़ा भाग

www.dawateislami.net

खड़ा हुवा, अब रईस उलटा लटका घोड़े के साथ साथ घिसट रहा था। उस ने पास खड़े नोकर को मदद के लिये पुकारा मगर उसे तो बदला चुकाने का मौक़अ़ मिल गया था, चुनान्चे उस ने अपने मालिक की मदद करने के बजाए जेब से उसी की दी हुई लिस्ट निकाली और दूर ही से उस को दिखा कर कहने लगा कि इस में येह कहीं नहीं लिखा कि अगर तुम्हारा पाउं घोड़े की रिकाब में उलझ जाए तो उसे छुड़ाना मेरी ड्यूटी है। येह सुन कर रईस नोकरों से किये हुए बुरे सुलूक पर पछताने लगा। **अल्लाह तआ़ला** हमें कीने से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

म-दनी मश्वरा : बुग़्ज़ो कीना के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**बुग़्ज़ो कीना**" का मुत़ा-लआ़ बेहद मुफ़ीद है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) क़ियामत में हुज़ूर صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَسَلَّم का क़ुर्ब मिले

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूद की कसरत करो, क्यूं कि जुमुआ़ के रोज़ मेरी उम्मत का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है, जिस शख़्स ने मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा वोह क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा मेरे क़रीब होगा।

(شعب الایمان، باب فی الصلوات، فضل الصلاۃ علی النبی ﷺ، ۳/۱۱۰، حدیث:۳۰۳۲)

उन पर दुरूद जिन को ह़जर तक करें सलाम
उन पर सलाम जिन को तह़िय्यत शजर की है

www.dawateislami.net

जिन्नो बशर सलाम को ह़ाज़िर हैं अस्सलाम

येह बारगाह मालिके जिन्नो बशर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 209)

ह़िकायत : 5 नजात का परवाना

ह़ज़रत सय्यिद मुह़म्मद कुर्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی इर्शाद फ़रमाते हैं : "मेरी वालिदए माजिदा ने ख़बर दी कि मेरे वालिदे माजिद (या'नी ह़ज़रत सय्यिद मुह़म्मद कुर्दी के नानाजान) जिन का नाम मुह़म्मद था उन्हों ने मुझे वसिय्यत की थी कि "जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए और मुझे ग़ुस्ल दे लिया जाए तो छत से मेरे कफ़न पर एक **सब्ज़ रंग** का रुक़्आ गिरेगा जिस में लिखा होगा " هٰذِهٖ بَرَاءَةُ مُحَمَّدِ نِ الْعَالِمِ بِعِلْمِهٖ مِنَ النَّار या'नी मुह़म्मद जो आ़लिम है इस को इस के इ़ल्म के सबब जहन्नम से छुटकारा मिल गया है।" उस रुक़्ए़ को मेरे कफ़न में रख देना।" चुनान्चे ग़ुस्ल के बा'द रुक़्आ़ गिरा, जब लोगों ने रुक़्आ़ पढ़ लिया तो मैं ने उसे उन के सीने पर रख दिया। उस रुक़्ए़ में एक **ख़ास बात** येह थी कि जिस त़रह़ उसे सफ़्हे के ऊपर से पढ़ा जाता था इसी त़रह़ सफ़्हे के पीछे से भी पढ़ा जाता था। मैं ने अपनी वालिदए माजिदा से पूछा कि नानाजान का अ़मल क्या था ? अम्मीजान ने फ़रमाया : " كَانَ اَكْثَرُ عَمَلِهٖ دَوَامُ الذِّكْرِ مَعَ كَثْرَةِ الصَّلٰوةِ عَلَى النَّبِی या'नी उन का येह अ़मल था कि वोह हमेशा **ज़िक्रुल्लाह** करने के साथ साथ **दुरूदे पाक** की कसरत भी किया करते थे।"

(سعادۃ الدارین، الباب الرابع ،اللطیفۃ السادسۃ التسعون، ص۱۵۲)

www.dawateislami.net

(4) बच्चियों की परवरिश करने की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने दो बच्चियों के बालिग़ होने तक परवरिश की तो मैं और वोह क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएंगे। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दोनों मुबारक उंग्लियों को मिला कर दिखाया। (مسلم،کتاب البر،باب فضل الاحسان،ص١٤١٥حدیث:٢٦٣١)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : परवरिश करने से मुराद येह है कि दो छोटी बच्चियों को पाले और उन की बेहतरी और ज़रूरत की चीज़ें जैसे अख़्राजात और कपड़ों का इन्तिज़ाम करता रहे। (فیض القدیر ، حرف المیم ، ٦/ ٢٣٠ ، تحت الحدیث : ٨٨٤٥)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : बालिग़ होने तक से मुराद येह है कि या तो बुलूग़त की उ़म्र को पहुंच जाएं या शादियां हो कर शोहर वालियां हो जाएं। (مرقاة المفاتیح ، کتاب الآداب ، باب الشفقة الرحمة علی الخلق،٨/ ٦٨٣ ، تحت الحدیث : ٤٩٥٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद अ़ली बिन मुह़म्मद अ़ल्लान सिद्दीक़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : क़ियामत में साथ आने से मुराद येह है कि वोह मैदाने मह़शर में मेरे साथ आएगा और मेरे क़ुर्ब में मौजूद होगा। (دلیل الفالحین ، جزء ٣ ، باب ملاطفة الیتیم ، ٢/ ٨٦،)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : उंग्लियां मिलाने से इस बात की त़रफ़ इशारा करना मक़्सूद था कि येह अ़मल करने वाला आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़रीब है, या'नी इस काम को करने वाला उन द-रजात में से एक (تحت الحدیث: ٢٦٨)

www.dawateislami.net

द-रजे का क़ुर्ब पा लेता है जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता हुए हैं। (فیض القدیر، حرف المیم، ٦/ ٢٣٠، تحت الحدیث: ٨٨٤٥) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : ख़ुशदिली से दो लड़कियों को पाल देना ख़्वाह अपनी बेटियां हों या बहनें हों या यतीमा बच्चियां, क़ियामत में मुझ से क़ुर्ब का ज़रीआ़ है, और जिसे उस दिन हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का क़ुर्ब नसीब हो जाए उसे सब कुछ मिल जाए। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 546)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बच्चियों की परवरिश के इन्आ़म में मिलने वाली फ़ज़ीलत जहां सआ़दत मन्दों के लिये दिलो दिमाग़ की राह़तों का सबब है वहीं बेटियों की पैदाइश पर ना गवारी का इज़्हार करने वालों के लिये दर्से इ़ब्रत भी है जो मह़ज़ अपनी अना की तस्कीन और झूटी इ़ज़्ज़त बर क़रार रखने के लिये बेटियों का बाप कहलाना पसन्द नहीं करते, ऐसों को भी चाहिये कि ख़ुशदिली से बच्चियों की परवरिश करें और उख़्रवी इन्आ़मात के मुस्तह़िक़ क़रार पाएं।

जन्नत में यूं होंगे

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ دَخَلْتُ اَنَا وَهُوَ الْجَنَّةَ كَهَاتَيْنِ وَاَشَارَ بِاِصْبَعَيْهِ या'नी जिस ने दो बच्चियों की परवरिश की मैं और वोह जन्नत में यूं होंगे, और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दो मुबारक उंग्लियों को मिला कर इशारा फ़रमाया।

(ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی النفقة علی البنات والاخوات، ٣/ ٣٦٦ حدیث: ١٩٢١)

www.dawateislami.net

म-दनी मश्वरा : बेटी की परवरिश के मज़ीद फ़ज़ाइल और दीगर मा'लूमात के हुसूल के लिये मक-त-बतुल मदीना का 32 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाला **"ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी"** ज़रूर पढ़िये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) ख़ाला, फूफी, नानी और दादी की कफ़ालत करने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बेटियों के साथ साथ दीगर रिश्तेदार औरतों की कफ़ालत की भी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है चुनान्चे ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : जिस ने दो बेटियों, दो बहनों, दो ख़ालाओं, दो फूफियों या नानी और दादी की कफ़ालत की वोह और मैं जन्नत में यूं होंगे, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और उस के साथ वाली उंगली को मिलाया। (المعجم الكبير، ٣٨٥/٢٢، حديث: ٩٥٩)

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 176)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) यतीम बच्चों की कफ़ालत का सवाब

रसूले बे मिसाल, बीबी आमीना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने तीन यतीम बच्चों की कफ़ालत की वोह दिन को रोज़ा रखने, रात को इबादत करने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में

www.dawateislami.net

जिहाद करने वाले की त़रह़ है, मैं और वोह जन्नत में यूं एक साथ होंगे जैसे येह दो उंग्लियां, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शहादत और बीच वाली उंगली को मिलाया।

(سنن ابن ماجه،كتاب الادب،باب حق اليتيم،٤/١٩٤ حديث:٣٦٨٠)

यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में मेरे साथ होगा

सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस त़रह़ होंगे, शहादत और बीच वाली उंगली की त़रफ़ इशारा किया। (بخاری،کتا ب الادب،باب فضل من يعول يتيما، ٤/١٠١ حديث:٦٠٠٥)

यतीम के सर पर हाथ फैरने की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किसी यतीम (लड़के या लड़की) के सर पर हाथ फैरेगा तो जिस जिस बाल पर से उस का हाथ गुज़रेगा उस के इ़वज़ हाथ फैरने वाले के लिये नेकियां लिखी जाएंगी और जो अपने ज़ेरे कफ़ालत यतीम (लड़के या लड़की) के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं और वोह जन्नत में इस त़रह़ होंगे। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और बीच वाली उंग्लियों को मिलाया।

(مسند احمد بن حنبل، حديث ابی امامة، ٨/٣٠٠،حديث:٢٢٣٤٧)

www.dawateislami.net

वोह जन्नत में मेरा साथी या पड़ोसी होगा

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : वोह जन्नत में मेरा साथी या पड़ोसी होगा जैसे बादशाह के ख़ुद्दाम बादशाह की कोठी में ही रहते हैं मगर ख़ादिम हो कर ऐसे ही वोह भी मेरे साथ रहेगा मगर मेरा उम्मती ग़ुलाम हो कर। यतीम बच्चे से किसी क़िस्म का सुलूक हो सवाब का बाइस है। ﴾मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :﴿ दो उंग्लियों से मुराद कलिमे की और बीच की उंगली मुराद है जिन में फ़ासिला बिल्कुल नहीं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 563)

दिल की सख़्ती दूर होती है

यतीम के सर पर हाथ फैरने और मिस्कीन को खाना खिलाने से दिल की सख़्ती दूर होती है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की। नबिय्ये रहमत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : यतीम के सर पर हाथ फैरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ।

(مسند امام احمد ، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۳۳۵، حدیث:۹۰۲۸)

यतीम की ता'रीफ़

जिस का बाप फ़ौत हो जाए वोह यतीम कहलाता है बशर्ते कि ना बालिग़ हो, बालिग़ लड़का यतीम नहीं कहलाता।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 113)

www.dawateislami.net

सायए अ़र्श नसीब होगा

साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जिस ने किसी यतीम या बेवा की कफ़ालत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा। (المعجم الاوسط،٦/٤٢٩،حديث:٩٢٩٢)

हिकायत : 6

सज़ा के बजाए वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया

एक बच्चे ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز के बेटे को मारा, लोग उस बच्चे को पकड़ कर उन की ज़ौजा फ़ातिमा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक के पास ले गए। ख़लीफ़ए वक़्त ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दूसरे कमरे में थे, शोर सुना तो कमरे से निकल आए। इसी दौरान एक औ़रत आई और कहने लगी : येह मेरा बच्चा है और यतीम है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा : इस यतीम को वज़ीफ़ा मिलता है ? अ़र्ज़ की : नहीं। ख़ादिम से फ़रमाया : इस का नाम वज़ीफ़ा ख़्वार बच्चों में लिख लो।

(سیرت ابن جوزی ص ۲۰۷)

सच है कि हर बुलन्द मर्तबा शख़्स आ़जिज़ी और दूसरों की दिलजूई करने वाला होता है। उस की मिसाल तो उस दरख़्त की सी होती है, जिस पर जितने ज़ियादा फल आते हैं उस की शाख़ें उसी क़दर झुक जाती हैं, जो ख़ुश नसीब कमज़ोरों के साथ नरमी और मुरव्वत का बरताव करते हैं, वोह क़ियामत के दिन शादां व फ़रह़ां होंगे जब कि मग़रूरों को शरमिन्दगी के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

www.dawateislami.net

सब से पसन्दीदा घर

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुसल्मानों के घरों में से बेहतरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ अच्छा सुलूक किया जाता हो और मुसल्मानों के घरों में से बद तरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ बुरा सुलूक किया जाता हो।

(سنن ابن ماجه،كتاب الادب، باب حق اليتيم،٤/١٩٣،حديث:٣٦٧٩)

यतीम से हुस्ने सुलूक की सूरतें

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : यतीम से सुलूक की बहुत सूरतें हैं : इस की परवरिश, इस के खाने पीने का इन्तिज़ाम, इस की ता'लीमो तरबियत, इसे दीनदार नमाज़ी बनाना सब ही इस में दाख़िल है। ग़रज़ कि जो सुलूक अपने बच्चे से किया जाता है वोह यतीम से किया जाए (और) बुरे सुलूक में मज़्कूरा चीज़ों की मुक़ाबिल तमाम चीज़ें दाख़िल हैं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 562)

शैतान दस्तर ख़्वान के क़रीब न आए

नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस क़ौम के दस्तर ख़्वान पर यतीम होता है शैतान उस दस्तर ख़्वान के क़रीब नहीं जाता। (معجم اوسط،٥/٢٣٠، حديث:٧١٦٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) बाल-बच्चे वाले नेक आदमी की फ़ज़ीलत

क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : مَنْ قَلَّ مَالُهٗ وَكَثُرَ عِيَالُهٗ وَحَسُنَتْ صَلَاتُهٗ وَلَمْ يَغْتَبِ الْمُسْلِمِيْنَ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَهُوَ مَعِى كَهَاتَيْنِ या'नी जिस का माल कम हो, अहलो इयाल ज़ियादा हों, नमाज़ अच्छी हो और मुसल्मानों की ग़ीबत न करे, क़ियामत के दिन वोह मेरे साथ इस तरह आएगा जिस तरह येह दो उंग्लियां मिली हुई हैं। (مسندابی يعلی، ١/٤٢٨، حديث:٩٨٦)

करीम ऐसा मिला कि जिस के खुले हैं हाथ और भरे ख़ज़ाने
बताओ ऐ मुफ़्लिसो ! कि फिर क्यूं तुम्हारा दिल इज़्तिराब में है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 7 तुम्हारी दुआ मेरी दुआ से अफ़्ज़ल है

हज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन हारिस हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की ख़िदमत में किसी ने अर्ज़ की, कि मेरे लिये दुआ फ़रमाइये क्यूं कि मैं अहलो इयाल के अख़राजात की वज्ह से परेशान हूं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जब घर वाले तुम से कहें कि हमारे पास न तो आटा है और न ही रोटी तो उस वक़्त तुम मेरे लिये दुआ करना क्यूं कि तुम्हारी उस वक़्त की दुआ मेरी दुआ से अफ़्ज़ल है। (إحياءُ العُلوم، ٤/ ٢٥١)

हिकायत : 8 मिस्कीन मां का बच्चियों पर ईसार

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे पास एक मिस्कीन औरत आई जिस के साथ उस की दो बेटियां भी थीं, मैं ने उसे तीन खजूरें दीं। उस ने हर एक को एक एक खजूर दी, फिर जिस खजूर को वोह खुद खाना चाहती थी उस के दो टुकड़े कर के वोह खजूर भी उन (या'नी दोनों बेटियों) को खिला दी। मुझे इस वाक़िए से बहुत तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने

www.dawateislami.net

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में उस ख़ातून के ईसार का बयान किया तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस (ईसार) की वज्ह से उस औ़रत के लिये जन्नत वाजिब कर दी। (مسلم،کتاب البروالصلة،باب فضل الاحسان الی البنات،ص١٤١٥، حدیث:٢٦٣٠)

ग़ीबत न करने वाले को जन्नत की ज़मानत

रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जो शख़्स अपने घर में बैठा रहे और किसी मुसल्मान की **ग़ीबत** न करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये (जन्नत का) ज़ामिन है।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ، ٤٦/٣، حدیث:٣٨٢٢، ملتقطاً)

हि़कायत : 9 वोह तो बच गए मगर मुसल्मान भाई न बचा

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन हुसैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बिन मुआ़विया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में एक शख़्स का बुराई के साथ तज़्किरा किया, उन्हों ने मुझे जलाल भरी नज़रों से देखा और पूछा : क्या तुम ने रूमियों के ख़िलाफ़ जंग की है ? मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं। वोह बोले : सिन्धियों के ख़िलाफ़ जंग की है ? जवाब दिया : नहीं। बोले : हिन्दूओं के ख़िलाफ़ ? अ़र्ज़ की : नहीं। पूछा : तुर्कियों के ख़िलाफ़ जंग की है ? मैं ने जवाब दिया : नहीं। फ़रमाने लगे : रूमी, सिन्धी, हिन्दू और तुर्की तो तुम से बच गए लेकिन तुम्हारा एक **मुसल्मान** भाई तुम से मह़फ़ूज़ न रह सका। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं : इस के बा'द मैं ने कभी किसी की **ग़ीबत** नहीं की। (البدایة والنهایة، ٦/ ٤٨٤)

www.dawateislami.net

नेक लोगों की बुराइयां करना

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : किसी शख़्स के बुरा होने के लिये इतना काफ़ी है कि वोह ख़ुद नेक न हो और फिर भी नेक लोगों की बुराइयां करता फिरे ।

(المستطرف،الباب الثانی والثلاثون فی ذکر الاشرار۔۔الخ،۱/۲۶۹)

ग़ीबत हो जाने पर ख़ुद को सज़ा देते

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन वह्ब क़-रशी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने अपने लिये येह सज़ा मुक़र्रर की, कि जब मुझ से किसी की ग़ीबत हो गई तो कफ़्फ़ारे में एक रोज़ा रखूंगा, मगर रफ़्ता रफ़्ता येह सज़ा मेरी आ़दत बन जाने की वज्ह से मेरे लिये आसान हो गई, तो मैं ने मज़ीद एक और सज़ा मुक़र्रर कर ली कि अब एक दिरहम भी स-दक़ा किया करूंगा, येह सज़ा मेरे लिये मुश्किल साबित हुई और यूं ग़ीबत की नुहूसत से छुटकारा मिल गया ।

(ترتیب المدارک، ۳/۲۴۰)

म-दनी मश्वरा : ग़ीबत के नुक़्सानात व दीगर मा'लूमात के ह़ुसूल के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''ग़ीबत की तबाह कारियां''** ज़रूर पढ़िये ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) अहले बैत से मह़ब्बत करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم रिवायत फ़रमाते हैं कि **रसूले** बे मिसाल, बीबी

www.dawateislami.net

आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़राते ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का हाथ पकड़ कर फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّنِیْ وَاَحَبَّ هٰذَیْنِ وَاَبَا هُمَا وَاُمَّهُمَا كَانَ مَعِیَ فِیْ دَرَجَتِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ या'नी जिस ने मुझ से, इन दोनों (या'नी ह़-सनैने करीमैन) से और इन के वालिदैन से मह़ब्बत की वोह क़ियामत के दिन मेरे द-रजे में मेरे साथ होगा।

(ترمذی،کتاب المناقب،باب مناقب علی بن ابی طالب،۵/۴۱۰،حدیث:۳۷۵۴)

अल्लाह की रिज़ा के लिये मह़ब्बत

नवासए रसूल, शहीदे करबला, इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इर्शाद फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّنَا لِلدُّنْیَا فَاِنَّ صَاحِبَ الدُّنْیَا یُحِبُّهُ الْبَرُّ وَالْفَاجِرُ وَمَنْ اَحَبَّنَا لِلّٰهِ كُنَّا نَحْنُ وَهُوَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ كَهَاتَیْنِ या'नी जिस ने दुन्या को ह़ासिल करने के लिये हम से मह़ब्बत की तो दुन्या वाले से हर नेक व बद मह़ब्बत करता है और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हम से मह़ब्बत की हम और वोह क़ियामत के दिन यूं होंगे, शहादत और दरमियानी उंगली से इशारा फ़रमाया।

(المعجم الکبیر،۳/۱۲۵،حدیث:۲۸۸۰)

क़ुरआन और अहले बैत की मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़राते ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और इन के वालिदैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मह़ब्बत रखने वाले को जन्नत में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब नसीब होगा, अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن से मह़ब्बत के मु-तअ़ल्लिक़ क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में वाज़ेह़ बयान मौजूद है चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

www.dawateislami.net

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ (پ۲۵،الشوری:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इस आयत के तह़्त लिखते हैं : मा'ना येह हैं कि मैं हिदायत व इर्शाद पर कुछ उजरत नहीं चाहता लेकिन क़राबत के हुक़ूक़ तो तुम पर वाजिब हैं, इन का लिह़ाज़ करो और मेरे क़राबत वाले तुम्हारे भी क़राबती हैं, इन्हें ईज़ा न दो। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) से मरवी है कि क़राबत वालों से मुराद हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आले पाक है।

(بخاری، کتاب التفسیر، باب الا المودة فی القربی، ۳/۳۲۰، حدیث:۴۸۱۸)

अहले क़राबत से मुराद कौन हैं ?

(सदरुल अफ़ाज़िल मज़ीद लिखते हैं :) अहले क़राबत से कौन कौन मुराद हैं इस में कई क़ौल हैं, **एक** तो येह कि मुराद इस से ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते फ़ात़िमा व ह़-सनैने करीमैन हैं رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم, **एक** क़ौल येह है कि आले अ़ली व आले अ़क़ील व आले जा'फ़र व आले अ़ब्बास मुराद हैं और **एक** क़ौल येह है कि हुज़ूर (صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के वोह अक़ारिब मुराद हैं जिन पर स-दक़ा ह़राम है और वोह मुख़्लिसीने बनी हाशिम व बनी मुत्त़लिब हैं, हुज़ूर (صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की अज़्वाजे मुत़ह्हरात हुज़ूर के अहले बैत में दाख़िल हैं। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत और हुज़ूर के अक़ारिब की महब्बत दीन के फ़राइज़ में से है। (خازن، ۴/۱۰۱) (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 893, 894)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सादात से हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 10 सफ़हा 105 पर सादाते किराम के फ़ज़ाइल बयान करते हुए नक़्ल करते हैं : **इब्ने अ़साकिर** अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रावी, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं रोज़े क़ियामत इस का सिला उसे अ़ता फ़रमाऊंगा।

(ابن عساکر،٤٥/٣٠٣،رقم:٥٢٥٤)

हिकायत : 10

बिग़ैर हज किये हाजी

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हम दोनों भाई एक क़ाफ़िले के साथ **हज** के लिये रवाना हुए, जब "कूफ़ा" पहुंचे तो मैं कुछ ख़रीदने के लिये बाज़ार की तरफ़ निकला, राह में येह अ़जीब मन्ज़र देखा कि एक वीरान सी जगह पर एक मुर्दार पड़ा था और एक मफ़्लूकुल हाल औ़रत चाकू से उस के गोश्त के टुकड़े काट काट कर एक टोकरी में रख रही थी। मैं ने ख़याल किया कि येह मुर्दार गोश्त लिये जा रही है इस पर ख़ामोश नहीं रहना चाहिये मुम्किन है कि येह कोई भटियारन हो कि येही पका कर लोगों को खिला दे, मैं चुपके से उस के पीछे हो लिया।

वोह औ़रत एक मकान पर आ कर रुकी और दरवाज़ा खट-खटाया, अन्दर से आवाज़ आई : कौन ? उस ने कहा : खोलो ! मैं ही बदहाल हूं। दरवाज़ा खुला और उस में से चार लड़कियां आईं जिन से बदहाली

www.dawateislami.net

और मुसीबत के आसार ज़ाहिर हो रहे थे। उस औरत ने अन्दर जा कर वोह टोकरी उन लड़कियों के सामने रख दी और **रोते** हुए कहा : "इस को पका लो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करो, **अल्लाह तआ़ला** का अपने बन्दों पर इख़्तियार है, लोगों के दिल उसी के क़ब्ज़े में हैं।" वोह लड़कियां उस गोश्त को काट काट कर आग पर भूनने लगीं। मुझे क़ल्बी रन्ज हुवा, मैं ने बाहर से आवाज़ दी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दी ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये इस को न खाना।" वोह बोली : तू कौन है ? मैं ने कहा : मैं एक परदेसी आदमी हूं। बोली : ऐ परदेसी ! हम ख़ुद ही मुक़द्दर के क़ैदी हैं, तीन साल से हमारा कोई मुईनो मददगार नहीं, अब तू हम से क्या चाहता है ? मैं ने कहा : मजूसियों के एक फ़िर्क़े के सिवा किसी मज़हब में मुर्दार का खाना जाइज़ नहीं। वोह बोली : "हम ख़ानदाने नुबुव्वत के शरीफ़ (सय्यिद) हैं, इन लड़कियों का बाप बड़ा नेक आदमी था वोह अपने ही जैसों से इन का निकाह़ करना चाहता था, इस की नौबत न आई और उस का इन्तिक़ाल हो गया। जो तर्का (विरसा) उस ने छोड़ा था वोह ख़त्म हो गया, हमें मा'लूम है कि मुर्दार खाना जाइज़ नहीं लेकिन ह़ालते इज़्तिरार में जाइज़ हो जाता है और हमारा चार दिन का फ़ाक़ा है।"[1] ख़ानदाने सादात के दर्दनाक ह़ालात सुन कर मुझे **रोना** आ गया और मैं इन्तिहाई बेचैनी

मदीना

1 : बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़ह़ा 373 पर है : **मस्अला 1 :** इज़्तिरार की ह़ालत में या'नी जब कि जान जाने का अन्देशा है अगर ह़लाल चीज़ खाने के लिये नहीं मिलती तो ह़राम चीज़ या मुर्दार या दूसरे की चीज़ खा कर अपनी जान बचाए और इन चीज़ों के खा लेने पर इस सूरत में मुआ-ख़ज़ा नहीं, बल्कि न खा कर मर जाने में मुआ-ख़ज़ा है अगर्चे पराई चीज़ खाने में तावान देना होगा। **मस्अला 2 :** प्यास से हलाक होने का अन्देशा है, तो किसी चीज़ को पी कर अपने को हलाकत से बचाना फ़र्ज़ है। पानी नहीं है और शराब मौजूद है और मा'लूम है कि इस के पी लेने में जान बच जाएगी, तो इतनी पी ले जिस से येह अन्देशा जाता रहे।

www.dawateislami.net

के साथ वहां से वापस हुवा।

मैं ने भाई के पास आ कर कहा कि मेरा इरादा **ह़ज** का नहीं है। उस ने मुझे बहुत समझाया और **ह़ज** के फ़ज़ाइल बताए कि **ह़ाजी** ऐसी ह़ालत में लौटता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं रहता वग़ैरा वग़ैरा। मगर मैं ने ब इसरार अपने कपड़े, एह़राम की चादरें और जो सामान मेरे साथ था जिस में छसो600 दिरहम नक़्द भी थे सब ले कर चल दिया बाज़ार से 100 दिरहम का आटा और 100 दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और बाक़ी 400 दिरहम आटे में छुपा दिये और सादाते किराम के घर पहुंचा और सब सामान कपड़े और आटा वग़ैरा उन को पेश कर दिया। उस **औ़रत** ने **अल्लाह तआ़ला** का शुक्र अदा किया और इस त़रह़ दुआ़ दी : "ऐ इब्ने सुलैमान ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे अगले पिछले सब गुनाह मुआ़फ़ करे और तुझे **ह़ज का सवाब** और अपनी जन्नत में जगह अ़त़ा फ़रमाए और इस का ऐसा बदला अ़त़ा करे जो तुझ पर भी ज़ाहिर हो जाए।" **सब से बड़ी लड़की** ने दुआ़ दी : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा अज्र दुगना करे और तेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाए।" **दूसरी** ने इस त़रह़ दुआ़ दी : "**अल्लाह तआ़ला** तुझे इस से बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाए जितना तू ने हमें दिया।" **तीसरी** ने दुआ़ देते हुए कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे नानाजान रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तेरा ह़श्र करे।" **चौथी** ने जो सब से छोटी थी उस ने यूं दुआ़ दी : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने हम पर एह़सान किया तू इस का ने'मल बदल उस को जल्दी अ़त़ा कर और उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा।"

www.dawateislami.net

हुज्जाज का क़ाफ़िला रवाना हो गया और मैं उस की वापसी के इन्तिज़ार में **कूफ़े** ही में मजबूरन पड़ा रहा। यहां तक कि ह़ाजियों की वापसी शुरूअ़ हो गई जूं ही हुज्जाज का एक क़ाफ़िला मेरी आंखों के सामने आया अपनी ह़ज की सआ़दत से मह़रूमी पर मेरे आंसू निकल आए। मैं उन से दुआ़एं लेने के लिये आगे बढ़ा, जब उन से मुलाक़ात कर के मैं ने कहा : "**अल्लाह तआ़ला** आप ह़ज़रात का **ह़ज** क़बूल फ़रमाए और आप के अख़्राजात का बेहतरीन बदल अ़त़ा फ़रमाए।" उन में से एक ह़ाजी ने ह़ैरत का इज़्हार करते हुए कहा कि येह दुआ़ कैसी ? मैं ने कहा : "ऐसे ग़मज़दा शख़्स की दुआ़ जो दरवाज़े तक पहुंच कर ह़ाज़िरी से मह़रूम रह गया !" वोह कहने लगा : बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि आप वहां जाने से इन्कार करते हैं ! क्या आप हमारे साथ **अ़-रफ़ात** के मैदान में नहीं थे ? क्या आप ने हमारे साथ शैत़ान को **कंकरियां** नहीं मारी थीं ? और क्या आप ने हमारे साथ **त़वाफ़** नहीं किये ? मैं अपने दिल में सोचने लगा कि यक़ीनन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी लुत़्फ़ो करम है।

इतने में मेरे शह़र के ह़ाजियों का क़ाफ़िला भी आ पहुंचा। मैं ने उन से भी कहा कि "**अल्लाह तआ़ला** आप ख़ुश नसीबों की सअ़ूय मश्कूर फ़रमाए और आप का **ह़ज** क़बूल करे।" वोह भी ह़ैरान हो कर कहने लगे : आप को क्या हो गया है ! येह अज्नबिय्यत कैसी !! क्या आप **अ़-रफ़ात** में हमारे साथ न थे ? क्या हम ने मिलजुल कर **रम्ये जमरात** नहीं की थी ? उन में से एक ह़ाजी साह़िब आगे बढ़े और मेरे क़रीब आ कर कहने लगे कि भाई ! अन्जान क्यूं बनते हैं ! हम मक्के मदीने में इकट्ठे ही तो थे ! येह देखिये ! जब हम रौज़ए अत़्हर की

www.dawateislami.net

ज़ियारत कर के बाबे जिब्रईल से बाहर आ रहे थे तो उस वक़्त भीड़ की वज्ह से आप ने येह **थेली** मुझे बतौ़रे अमानत दी थी जिस की मोहर पर लिखा हुवा है : **مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ** या'नी "जो हम से मुआ़-मला करता है नफ़्अ़ पाता है।" येह लीजिये अपनी थेली ! ह़ज़रते रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَدِيْع फ़रमाते हैं कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने उस थेली को इस से पहले कभी देखा भी न था, ख़ैर मैं ने थेली ले ली। इशा की नमाज़ पढ़ कर अपना वज़ीफ़ा पूरा किया और लैट गया और सोचता रहा कि आख़िर क़िस्सा क्या है ! इसी में नींद ने घेर लिया, मेरी ज़ाहिरी आंख तो क्या बन्द हुई, दिल की आंख खुल गई اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से शरफ़-याब हुवा, मैं ने अपने मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में सलाम अ़र्ज़ किया और दस्त बोसी की। शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाते हुए सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया : "ऐ रबीअ़ ! हम कितने गवाह क़ाइम करें और तुम हो कि क़बूल ही नहीं करते, सुनो ! बात येह है कि जब तुम ने उस ख़ातून पर जो मेरी औलाद में से थी, एह़सान किया और अपना ज़ादे राह ईसार कर के अपना ह़ज **मुल्तवी** कर दिया तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि वोह इस का ने'मल बदल तुम्हें अ़ता फ़रमाए तो **अल्लाह तआ़ला** ने एक फ़िरिश्ता तुम्हारी सूरत पर पैदा फ़रमाया और हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक हर साल तुम्हारी त़रफ़ से **ह़ज** किया करे नीज़ दुन्या में तुम्हें येह इ़वज़ (या'नी बदला) दिया कि 600 दिरहम के बदले 600 दीनार (सोने की अश्रफ़ियां) अ़ता फ़रमाए, तुम अपनी आंख ठन्डी रखो।" फिर हुज़ूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने थेली की मोहर

www.dawateislami.net

पर लिखे हुए मुबारक अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए : ''مَنْ عَامَلَنَا رَبِحَ'' (या'नी जो हम से मुआ़-मला करता है नफ़्अ़ पाता है) ह़ज़रते रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِيْع फ़रमाते हैं कि जब मैं सो कर उठा और उस थेली को खोला तो उस में 600 सोने की अशरफ़ियां थीं। (رشفۃ الصّادی ص۲۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) जिस ने मेरी पैरवी की वोह मुझ से है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **فَمَنِ اقْتَدٰى بِىْ فَهُوَ مِنِّىْ** या'नी जिस ने मेरी पैरवी की वोह मुझ से है। (مسند احمد بن حنبل،حدیث رجل من الانصار،۹/۱۲٤،حدیث:۲۳۵۳۳)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی एक और ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए ''**वोह मुझ से है**'' के तह़्त लिखते हैं : या'नी वोह मेरे गुरौह या मेरे दीन वालों में से है, जैसा कि अहले लुग़त कहते हैं ''फ़ुलां मुझ से है'' गोया कि उस का बा'ज़ ह़िस्सा इस से मिला हुवा है। (فیض القدیر،٦/٥٥،تحت الحدیث:۸۳۵۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) तू उसी के साथ होगा जिस से मह़ब्बत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **रसूले** बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की, कि क़ियामत कब आएगी ?

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : तू ने क्या तय्यारी की है ? अ़र्ज़ की : इस के सिवा कोई तय्यारी नहीं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत करता हूं। बेचैन दिलों के चैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَنْتَ مَعَ مَنْ اَحْبَبْتَ या'नी : तू क़ियामत में उसी के साथ होगा जिस के साथ तुझे महब्बत है। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने मुसल्मानों को इस्लाम के बा'द किसी चीज़ पर ऐसा ख़ुश होते नहीं देखा जैसा इस पर ख़ुश हुए।

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء ان المرء مع من احب، ۱۷۲/٤، حدیث:۲۳۹۲)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह (सुवाल करने वाले) साह़िब बड़े मुत्तक़ी परहेज़ गार इ़बादत गुज़ार थे, मगर इन्हों ने अपने आ'माल को क़ियामत की तय्यारी क़रार न दिया कि येह सब नेकियां तो **अल्लाह** की ने'मतों का शुक्रिय्या है जो मुझे दुन्या में मिल चुकीं और मिल रही हैं, आख़िरत की तय्यारी सिर्फ़ येह है कि मुझे इस बरात के दूल्हा से महब्बत है, दूल्हा से तअ़ल्लुक़, इस से महब्बत बरात के खाने वाने, जोड़े इन्आ़म का मुस्तह़िक़ बना देते हैं। (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि **अल्लाह** रसूल से महब्बत साइरीन और त़ाइरीन के मक़ामात में से आ'ला मक़ाम है, सारी इ़बादात महब्बत की फ़रोग़ हैं, मगर महब्बत के साथ इत़ाअ़त बल्कि मुता-ब-अ़त ज़रूरी है। बरात का खाना सिर्फ़ उ़म्दा लिबास से नहीं मिलता बल्कि दूल्हा के तअ़ल्लुक़ से मिलता है, अगर रब तआ़ला से कुछ लेना है तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से तअ़ल्लुक़ पैदा करो।

www.dawateislami.net

(मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) ह़ज़राते सह़ाबए किराम (عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان) को सब से बड़ी ख़ुशी तो अपने इस्लाम लाने पर हुई थी कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन्हें मोमिन सह़ाबी बनने की तौफ़ीक़ बख़्शी इस के बा'द आज येह फ़रमाने आ़ली सुन कर बड़ी ख़ुशी हुई। इस ख़ुशी की वज्ह येह है कि ह़ज़राते सह़ाबा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیۡہِ وَسَلَّم पर दिलो जान से फ़िदा थे, इन में से बा'ज़ तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के बिग़ैर चैन न पाते थे, इन्हें खटका था कि मदीनए मुनव्वरह में तो हम को हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब है कि यार ने मदीने में अपना काशाना बनाया है, मगर जन्नत में क्या बनेगा कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मक़ाम आ'ला इ़ल्लिय्यीन से भी आ'ला होगा, हम किसी और द-रजे में होंगे, आज हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पर्दा उठा दिया, तमाम को तसल्ली दे दी फ़रमा दिया कि जिस को मुझ से मह़ब्बत सह़ीह़ होगी उसे मुझ से फ़िराक़ न होगा, मेरे साथ ही रहेगा। ख़याल रहे कि यहां द-रजे की हमराही या बराबरी मुराद नहीं बल्कि ऐसी हमराही मुराद है जैसे सुल्त़ान के ख़ास ख़ुद्दाम सुल्त़ान के साथ उस के बंगले में रहते हैं। सब से बड़ा ख़ुश नसीब वोह है जिसे कल हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का क़ुर्ब नसीब हो जाए। इस क़ुर्ब का ज़रीआ़ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से मह़ब्बत है और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत का ज़रीआ़ इत्तिबाए़ सुन्नत, कसरत से दुरूद शरीफ़ की तिलावत, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ह़ालाते त़य्यिबा का मुत़ा-लआ़ और मह़ब्बत वालों की सोह़बत है, येह सोह़बत इक्सीरे आ'ज़म है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 589)

www.dawateislami.net

अहले अ़मल को उन के अ़मल काम आएंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) ख़ुश अख़्लाक़ की ख़ुश नसीबी

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اِنَّ مِنْ اَحَبِّكُمْ اِلَيَّ وَاَقْرَبِكُمْ مِنِّيْ مَجْلِساً يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَحَاسِنَكُمْ اَخْلَاقاً या'नी : मेरे नज़्दीक तुम में से ज़ियादा महबूब और क़ियामत के दिन मेरे सब से क़रीब बैठने वाले वोह लोग हैं जो सब से ज़ियादा ख़ुश अख़्लाक़ हैं। (ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی معالی الاخلاق،۳/۴۰۹،حدیث:۲۰۲۵)

हुस्ने अख़्लाक़ से क्या मुराद है ?

एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हुस्ने अख़्लाक़ के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾
(پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फैर लो।

फिर इर्शाद फ़रमाया : हुस्ने ख़ुल्क़ येह है कि तुम क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वाले से सिलए रेह्मी करो, जो तुम्हें महरूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो।

(احیاء العلوم،کتاب ریاضة النفس ـــالخ،بیان فضیلة حسن الخلق ـــالخ،۳/۶۱)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार

www.dawateislami.net

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अच्छे अख़्लाक़ से मुराद है ख़ल्क़ व ख़ालिक़ के हुक़ूक़ अदा करना, नर्म व गर्म हालात में शाकिरो साबिर रहना।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : अच्छी आ़दत से इबादात और मुआ़-मलात दोनों दुरुस्त होते हैं, अगर किसी के मुआ़-मलात तो ठीक मगर इबादात दुरुस्त न हों या इस के उलट हो तो वोह अच्छे अख़्लाक़ वाला नहीं। ख़ुश ख़ुल्क़ी बहुत जामेअ़ सिफ़त है कि जिस से ख़ालिक़ और मख़्लूक़ सब राज़ी रहें वोह ख़ुश ख़ुल्क़ी है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 482, 652)

हुस्ने अख़्लाक़ किसे कहते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने, ख़ूब भलाई करने और किसी को तक्लीफ़ न देने का नाम हुस्ने अख़्लाक़ है।

(ترمذی ،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی حسن الخلق، ۳/۴۰۴، حدیث:۲۰۱۲)

बद अख़्लाक़ी की दो अ़लामतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : आदमी के बद ख़ुल्क़ होने की अ़लामत येह है कि वोह अपने अहले ख़ाना के पास इस ह़ालत में जाए कि वोह ख़ुशी से मुस्कुरा रहे हों और इसे देख कर ख़ौफ़ से अलग अलग हो जाएं और एक अ़लामत येह है कि उस से बिल्ली भाग जाए या कुत्ता ख़ौफ़ की वज्ह से दीवार फलांग जाए। (تنبیہ المغترین،ص۱۹۹)

www.dawateislami.net

अच्छे अख़्लाक़ की ब-र-कत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अच्छे और उ़म्दा अख़्लाक़ को अपने और बन्दे के दरमियान मुलाक़ात का ज़रीआ़ बनाया है लिहाज़ा आदमी के लिये येह काफ़ी है कि अच्छे अख़्लाक़ के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को त़लब करे। **(ادب الدنیا والدین، ص۱۹۷)**

तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़िल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े ह़ुस्नो अदा की क़सम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़िकायत : 11 तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद हो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने एक ग़ुलाम को बुलाया, जवाब न मिलने पर जब देखा तो वोह लैटा हुवा था। आप ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ऐ ग़ुलाम ! क्या तुम ने सुना नहीं ? बोला : सुना है। दरयाफ़्त फ़रमाया : तो फिर जवाब क्यूं नहीं दिया ? ग़ुलाम ने अ़र्ज़ किया : मुझे मा'लूम है कि आप सज़ा नहीं देंगे इस लिये मैं ने जवाब देने में सुस्ती की। इर्शाद फ़रमाया : जाओ ! तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद हो। **(المستطرف، ۱/۲۰۷)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बनने में आसानी के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, इस म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से बे शुमार इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें गुनाहों से ताइब हो कर जन्नत में ले

www.dawateislami.net

जाने वाले आ'माल करने के लिये कोशां हैं, बतौ़रे तरग़ीब व तह़रीस एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा कीजिये : चुनान्चे

मैं नशे के इन्जेक्शन लगाता था

लोधरां (पंजाब, पाकिस्तान) के मज़ाफ़ाती अ़लाक़े ''जलालपूर मोड़'' के इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 22 साल) का बयान कुछ यूं है कि मैं बुरी सोह़बत की नुहूसत की वज्ह से नशे का ऐसा आ़दी था कि शायद ही ऐसा कोई नशा हो जो मैं न करता हूं, बिल ख़ुसूस नशे के इन्जेक्शन (Injection) की मुझे ऐसी आ़दत पड़ी हुई थी कि रोज़ाना डेढ़ दो सो के इन्जेक्शन लगवाता बल्कि अगर कोई न मिलता तो ख़ुद ही अपने आप को इन्जेक्शन लगा लिया करता था। वालिद साह़िब ने मुझे कारोबार करवा कर दिया मगर वोह भी बुरी आ़दतों और नशे के चक्कर में ख़त्म हो गया। घर वाले मेरी वज्ह से बेह़द परेशान थे, वालिद साह़िब ने तंग आ कर कई मर्तबा मुझे ज़न्जीर से बांध दिया ताकि मैं नशे का इन्जेक्शन न लगा सकूं मगर मैं बाज़ नहीं आता था। मैं अपने अ़लाक़े में ''लश्कारा'' के नाम से मश्हूर था, अफ़्सोस कि मैं और मेरा दोस्त मिल कर रिक्शा वालों से फ़ी कस दस रुपै भत्ता लिया करते और दुकानों से सामान मुफ़्त उठा लिया करते। आह! पांच वक़्त की नमाज़ तो दूर की बात है मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं ने उस ज़माने में कभी ईद की नमाज़ भी पढ़ी हो। एक दिन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने मुझे संभलने के अस्बाब मुहय्या कर दिये, हुवा यूं कि एक दिन मैं घर से निकला तो सब्ज़ इमामे वाले आ़शिक़ाने रसूल मेरे सामने आ गए और मुझ से कहने लगे : एक म-दनी क़ाफ़िला नेकी की दा'वत देने के लिये आप के मह़ल्ले की मस्जिद में आया हुवा है, बराए करम !

www.dawateislami.net

मग़रिब की नमाज़ मस्जिद में पढ़िये और सुन्नतों भरा बयान सुनिये। आ़शिक़ाने रसूल के आ़जिज़ाना लहजे से मैं बहुत मु-तअस्सिर हुवा और मग़रिब की नमाज़ पढ़ने मस्जिद में चला गया। नमाज़ के बा'द जब बयान सुना तो मेरे दिल पर इतनी गहरी चोट लगी कि जब उन्हों ने बयान के बा'द तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दी तो मैं हाथों हाथ तय्यार हो गया और सफ़र पर रवाना भी हो गया। म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत और इन्फ़िरादी कोशिश की ब-र-कत से मेरे दिल में ऐसा म-दनी इन्क़िलाब बरपा हुवा कि बा'दे तौबा सर पर सब्ज़ इ़मामा, म-दनी लिबास और फ़राइज़ो वाजिबात के साथ साथ म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल की भी पक्की निय्यत कर ली। इस निय्यत पर अ़मल की ब-र-कतें ज़ाहिर होना शुरूअ़ हुईं तो घर वालों की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा और मह़ल्ले वालों को भी ख़ुश गवार ह़ैरत हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने मह़ल्ले की मस्जिद में रोज़ाना तीन दर्स देने की सआ़दत ह़ासिल हुई, नीज़ दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ की ह़ैसिय्यत से मस्जिद भरो तह़रीक के लिये कोशां हूं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) ह़-रमैने त़य्यिबैन में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स दो ह़-रमों

www.dawateislami.net

(या'नी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा या मदीनए मुनव्वरह) में से किसी एक में मरेगा क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठाया जाएगा और जो सवाब की निय्यत से मदीने में मेरी ज़ियारत करने आएगा वोह क़ियामत के दिन मेरे पड़ोस में होगा। (شعب الایمان،باب فی مناسك، فضل الحج والعمرة،۳/ ۴۹۰، حدیث:۴۱۵۸)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : या'नी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा या मदीनए मुनव्वरह में मरने वाला क़ियामत की बड़ी घबराहट जिसे फ़-ज़ए अक्बर कहते हैं, इस से महफ़ूज़ रहेगा मगर येह फ़वाइद मुसल्मानों के लिये हैं लिहाज़ा इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि अबू जह्ल वग़ैरा कुफ़्फ़ार भी वहां ही मरे। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 4, स. 225)

مَنْ زَارَ تُرْبَتِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ

उन पर दुरूद जिन से नवीद इन बुशर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 202)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जिस से हो सके वोह मदीने में मरे क्यूं कि जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।

(ترمذی،کتاب المناقب،باب فضل المدینه،۵/۴۸۳،حدیث: ۳۹۴۳)

ज़मीं थोड़ी सी दे दे बहरे मदफ़न अपने कूचे में
लगा दे मेरे प्यारे मेरी मिट्टी भी ठिकाने से

(ज़ौक़े ना'त)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार

www.dawateislami.net

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसल्मानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरीन को या'नी जिस मुसल्मान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे कि ख़ुदा नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे, ख़ुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़्न वहां का ही नसीब हो। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दुआ़ करते थे कि मौला मुझे अपने मह़बूब के शह्र में शहादत की मौत दे, आप की दुआ़ ऐसी क़बूल हुई कि سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! फ़ज्र की नमाज़, मस्जिदे न-बवी, मेह़राबुन्नबी, मुसल्लाए नबी और वहां शहादत। मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरह में हैं, ह़ुदूदे मदीना बल्कि शह्रे मदीना से भी बाहर नहीं जाते इसी ख़त़रे से कि मौत बाहर न आ जाए, ह़ज़रते इमामे मालिक (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) का भी येह ही दस्तूर रहा, यहां शफ़ाअ़त से मुराद ख़ुसूसी शफ़ाअ़त है, गुनहगारों के सारे गुनाह बख़्शवाने की शफ़ाअ़त और नेककारों के बहुत द-रजे बुलन्द करने की शफ़ाअ़त, वरना ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी सारी ही उम्मत की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। ख़याल रहे कि मदीनए पाक में रहना भी अफ़्ज़ल वहां मरना भी आ'ला और वहां दफ़्न होना भी बेहतर ! (मुफ़्ती साह़िब मज़ीद लिखते हैं :) इस से इशारतन मा'लूम होता है कि जो शख़्स मदीनए पाक में मरने, दफ़्न होने की कोशिश करे वोह اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान पर मरेगा क्यूं कि उस के लिये शफ़ाअ़ते ख़ास का वा'दा है और शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिन की हो सकती है। (ازمرقات)

दर को तकते तकते हो जाऊं हलाक
वां की ख़ाके पाक से मिल जाए ख़ाक

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 222)

www.dawateislami.net

मदीनए मुनव्वरह में शहादत की दुआ

मुतम्मिमुल अर-बईन, जा नशीने सादिक़ो अमीन, अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह दुआ मांगा करते थे : اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِیْ شَھَادَۃً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपने रास्ते में शहादत नसीब फ़रमा और अपने रसूल के शहर में मौत अ़त़ा फ़रमा ।

(بخاری،کتاب فضائل المدینه، باب۱۳، ۱/۶۲۲،حدیث:۱۸۹۰)

हि़कायत : 12 إِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शहादत नसीब होगी

शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : इस दुआ़ का बाइस येह हुवा कि ह़ज़रते औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़्वाब देखा कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद हैं, शहीद किये जाएंगे, येह ख़्वाब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बयान किया तो फ़रमाया : मेरे लिये शहादत कहां मैं जज़ी-रतुल अ़रब के बीच में हूं, जिहाद करता नहीं मेरे इर्द गिर्द हर वक़्त लोग रहते हैं फिर फ़रमाया : नसीब होगी اِنْ شَآءَاللّٰہ, जिस वक़्त ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया था इस से मुस्तब्अ़द (बई़द) कोई और बात नहीं हो सकती थी, मगर जो फ़रमाया वोही हुवा और उन की येह दुआ़ क़बूल हुई और ब-लदे रसूल में शहादत नसीब हुई और ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में दफ़्न होना नसीब हुवा । (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 278)

त़यबा में मर के ठन्डे चले जाओ आंखें बन्द
सीधी सड़क येह शहरे शफ़ाअ़त नगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 222)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(14) मदीनए त़य्यिबा की सख़्ती व तंगी पर सब्र का इन्आ़म

मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत अपनी जगह, जो मदीने की सख़्ती व तंगी पर सब्र करे उस के भी वारे न्यारे हो जाते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मेरी उम्मत में से मदीने में तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र करेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के लिये गवाही दूंगा।

(مسلم،کتاب الحج،باب الترغیب فی سکنی المدینہ۔۔۔الخ،ص۷۱٦،حدیث:۱۳۷۸)

फूल क्या देखूं मेरी आंखों में

दश्ते त़यबा के ख़ार फिरते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 99)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : (या'नी) शफ़ाअ़ते ख़ुसूसी। ह़क़ येह है कि येह वा'दा सारी उम्मत के लिये है कि **मदीने** में मरने वाले हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की इस शफ़ाअ़त के मुस्तह़िक़ हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 210)

मदीना इस लिये अ़त्तार जानो दिल से है प्यारा

कि रहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 283)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सब्र करो और ख़ुश हो जाओ

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि **मदीने** में चीज़ों के निर्ख़ (या'नी भाव) बढ़ गए और ह़ालात सख़्त हो गए तो सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब्र करो और ख़ुश हो जाओ कि मैं ने तुम्हारे साअ़ और मुद को बा ब-र-कत कर दिया और इकठ्ठे हो कर खाया करो क्यूं कि एक का खाना दो को और दो का खाना चार को और चार का खाना पांच और छ[6] को किफ़ायत करता है और बेशक ब-र-कत जमाअ़त में है तो जिस ने **मदीने** की तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र किया मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा और जो इस के ह़ालात से मुंह फैर कर **मदीने** से निकला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बेहतर लोगों को इस में बसा देगा और जिस ने **अहले मदीना** से बुराई करने का इरादा किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस त़रह़ पिघला देगा जैसे नमक पानी में पिघल जाता है।" (البحر الزخار، وما روی عمرو بن دینار۔۔۔الخ، ۱/۲٤۰، حدیث:۱۲۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(15) यतीम बच्चों की परवरिश करने वाली मां

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : اَیُّمَا اِمْرَأَۃٍ قَعَدَتْ عَلٰی بَیْتِ اَوْلَادِھَا فَھِیَ مَعِیَ فِی الْجَنَّۃِ या'नी जो औ़रत अपनी औलाद के घर बैठी रहे उसे जन्नत में मेरा क़ुर्ब मिलेगा। (جامع الصغیر، ص۱۸۰، حدیث:۳۰۰۲)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "**अपनी औलाद के घर बैठी रहे**" के तह़्त लिखते

www.dawateislami.net

हैं कि : ज़ाहिर है कि अपनी औलाद के घर बैठने से मुराद औ़रत का अपनी यतीम औलाद की वज्ह से शादी न करना और अपनी औलाद की ख़ातिर ख़र्च में ज़ियादती से अपने आप को रोके रखना है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **"उसे जन्नत में मेरा क़ुर्ब मिलेगा"** के तह़्त लिखते हैं कि जन्नत में बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइ़य्यत (साथ) से मुराद येह है कि जन्नत में पहले जाने वालों में जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ होंगे उन में येह औ़रत भी होगी, जैसा कि एक ह़दीसे पाक में है : मैं सब से पहले जन्नत में दाख़िल होउंगा मगर एक औ़रत को देखूंगा कि मुझ से आगे जल्दी करेगी तो उस से पूछूंगा : तू कौन है ? तो वोह कहेगी : मैं वोह औ़रत हूं जिस ने ख़ुद को अपने यतीम बच्चों की परवरिश के लिये वक़्फ़ कर दिया था। रही बात मुस्त़फ़ा करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के द-रजे की तो इस द-रजे में कोई भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ न होगा।

(فیض القدیر،۳/ ۲۰۳،تحت الحدیث:۳۰۰۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(16) तुम जन्नत में मेरे साथ होगे

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मुख़ात़ब करते हुए इर्शाद फ़रमाया : يَا اَبَاذَرَ اَقِلَّ مِنَ الطَّعَامِ وَالْكَلَامِ تَكُنْ مَعِیَ فِی الْجَنَّةِ या'नी ऐ अबू ज़र ! खाना और गुफ़्त-गू कम करो, तुम जन्नत में मेरे साथ होगे।

(الفردوس بمأثور الخطاب،۵/ ۳٤۰،حدیث:۸۳٦۹)

www.dawateislami.net

ज़ियादा खाने से आदमी बीमार होता है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : ऐ लोगो ! ज़ियादा खाने से बचो ! क्यूं कि येह नमाज़ में सुस्ती, बदन को ख़राब करने और बीमारी का सबब बनता है।

(موسوعة لابن ابی الدنیا،کتاب اصلاح المال،باب القصد فی المطعم،۷/۴۸۱، حدیث:۳۵۲)

हिकायत : 13 खाना हज़्म करने वाली दवा का तोह़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़बैदुल्लाह** बिन अ़दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی इराक़ से आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, सलाम किया, फिर अ़र्ज़ की : "मैं आप के लिये एक तोह़फ़ा लाया हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम क्या तोह़फ़ा लाए हो ?" अ़र्ज़ की : "जवारिश।" फ़रमाया : "जवारिश क्या है ?" अ़र्ज़ की : "खाना हज़्म करने वाली एक दवा है।" फ़रमाया : "मैं ने 40 साल से पेट भर कर खाना नहीं खाया तो मैं इसे क्या करूंगा।"

(حلیة الاولیاء،رقم:٤٤، عبد اللّٰه بن عمر، ١/ ٣٧٢، رقم : ١٠٣٥)

हिकायत : 14 वोह दवा जिस के सबब कोई मरज़ न हो

मन्क़ूल है कि हारून रशीद ने चार अतिब्बा को जम्अ़ किया, उन में एक हिन्दूस्तानी, दूसरा रूमी, तीसरा इराक़ी और चौथा सवादी (इराक़ के अत़राफ़ में रहने वाला) था, उन से कहा : हर एक ऐसी दवा

www.dawateislami.net

बयान करे जिसे इस्ति'माल करने के सबब कोई मरज़ न हो। हिन्दूस्तानी ह़कीम ने कहा : मेरी नज़र में वोह सियाह हड़ है। इराक़ी ह़कीम ने कहा : वोह सफ़ेद हालूं (एक क़िस्म की बूटी) है। रूमी ह़कीम ने कहा : मेरे नज़्दीक वोह दवा गर्म पानी है। और सवादी जो कि उन में सब से ज़ियादा इल्मे तिब में महारत रखता था उस ने कहा : हड़ मे'दे में क़ब्ज़ कर देती है और येह एक बीमारी है, हालूं मे'दे में चिक्नाहट पैदा करती है और येह भी एक बीमारी है, और गर्म पानी मे'दे को ढीला कर देता है और येह भी बीमारी है। हारून रशीद ने कहा : तुम्हारे नज़्दीक वोह कौन सी दवा है ? सवादी ने कहा : वोह दवा मेरे नज़्दीक येह है कि आप खाना उस वक़्त तक न खाएं जब तक आप को ख़्वाहिश न हो और ख़्वाहिश अभी बाक़ी हो कि आप खाने से अपना हाथ खींच लें। हारून रशीद ने कहा : तुम ने सच कहा।

(احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشھوتین، بیان فوائد الجوع، ۳/۱۰۸)

कहीं मैं भूकों को भूल न जाऊं !

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जब ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों के मालिक हुए तो कभी भूके रहते और कभी जव की रोटी तनावुल फ़रमा लेते। आप عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया : क्या बात है कि ज़मीन के ख़ज़ानों के मालिक होने के बा वुजूद आप भूके रहते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि पेट भर कर खाने से कहीं मैं भूकों को भूल न जाऊं।

(المستطرف، الباب الحادی والعشرون، ۱/۱۹۵)

www.dawateislami.net

ज़ियादा गुफ़्त-गू बाइसे हलाकत है

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो क्यूं कि आदमी की हलाकत ज़ियादा गुफ़्त-गू करने में है।

(بحرالدموع،الفصل الثامن والعشرون، فضل الصمت،ص۱۷۵)

हर लफ़्ज़ का किस त़रह़ ह़िसाब आह ! मैं दूंगा
अल्लाह ज़बां का हो अ़त़ा क़ुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

लोहे का दरवाज़ा हो

अ़-श-रए मुबश्शरह में शामिल सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं चाहता हूं कि मेरे और लोगों के दरमियान एक लोहे का दरवाज़ा हो, न मुझ से कोई कलाम करे न मैं किसी से कलाम करूं यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाऊं।

(مختصر منهاج القاصدين، باب العزلة،ص۱۱۰)

हिकायत : 15 क्या तुम ने कोई बात भी की है ?

एक शख़्स कातिबे वह़्य ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास बैठा इधर उधर की फ़ुज़ूल बातें किये जा रहा था, जब काफ़ी देर तक बोल चुका तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से पूछने लगा : क्या अब मैं ख़ामोश हो जाऊं ? येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : क्या तुम ने कोई "बात" भी की है ?

(عیون الاخبار، کتاب العلم والبیان،جزء۲،۱/۱۹۰)

www.dawateislami.net

अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिन लोगों से ख़िताब करते हुए इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ऐ इब्ने आदम ! तुम लोगों को तो नेक काम करने की तरग़ीब देते हो लेकिन अपने आप को छोड़ देते हो, ऐ इब्ने आदम ! तुम लोगों को तो नसीह़त करते हो जब कि अपने आप को भूल जाते हो, ऐ इब्ने आदम ! तुम मुझे पुकारते हो फिर भी मुझ से दूर भागते हो अगर ऐसा ही है जैसा तुम कह रहे हो तो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो और अपने गुनाहों को याद रखो और अपने घर में बैठे रहो । (بحر الدموع، الفصل الثامن والعشرون، فضل الصمت، ص۱۷۵)

तू ने कोई फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू की है

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : अगर तू अपने दिल में सख़्ती या अपने बदन में सुस्ती या अपने रिज़्क़ में मह़रूमी देखे तो यक़ीन कर ले तू ने कोई फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू की है । (بحر الدموع، الفصل الثامن والعشرون، فضل الصمت، ص۱۷۵)

रफ़्तार का गुफ़्तार का किरदार का दे दे
हर उ़ज़्व का दे मुझ को ख़ुदा क़ुफ़्ले मदीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17) उस पर मेरी शफ़ाअ़त लाज़िम है

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम मुअज़्ज़िन को सुनो तो तुम भी उसी त़रह़ कहो जो वोह कह रहा है, फिर मुझ पर दुरूद भेजो क्यूं कि जो मुझ पर एक दुरूद भेजता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये वसीला मांगो, वोह जन्नत में एक जगह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक ही के लाइक़ है मुझे उम्मीद है कि वोह मैं ही हूं तो जो मेरे लिये वसीला मांगे उस पर मेरी शफ़ाअ़त लाज़िम है।

(مسلم،کتاب الصلاۃ ،باب استحباب القول مثل قول المؤذن۔۔۔الخ،ص۲۰۳،حدیث:۳۸٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि कलिमाते अज़ान सारे दोहराए ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ'' भी ''اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم'' भी और ''حَیَّ عَلَی الْفَلَاح'' भी। अगली ह़दीस में आ रहा है कि ''حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ'' और ''حَیَّ عَلَی الْفَلَاح'' पर लाह़ौल पढ़े। चाहिये कि दोनों ही कह लिया करे ताकि दोनों ह़दीसों पर अ़मल हो जाए।

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है''** के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि अज़ान के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है, बा'ज़ मुअज़्ज़िन अज़ान से पहले ही दुरूद शरीफ़ पढ़ लेते हैं इस में भी ह़रज नहीं, इन का माख़ज़ येह ही ह़दीस है। (अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन) शामी ने फ़रमाया कि इक़ामत के वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है। ख़याल रहे कि अज़ान से पहले या बा'द बुलन्द आवाज़

www.dawateislami.net

से दुरूद पढ़ना भी जाइज़ बल्कि सवाब है, बिला वज्ह इसे मन्अ़ नहीं कह सकते।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हदीसे पाक के इस हिस्से **"फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये वसीला मांगो"** के तहत फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि वसीला सबब और तवस्सुल को कहते हैं, चूंकि उस जगह पहुंचना रब से क़ुर्बे ख़ुसूसी का सबब है, इस लिये वसीला फ़रमाया गया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का फ़रमाना कि **"उम्मीद करता हूं"** तवाज़ोअ़ और इन्किसारी के लिये है वरना वोह जगह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये नामज़द हो चुकी है। **(مرقاۃ واشعہ)** हमारा हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये वसीला की दुआ़ करना ऐसा ही है जैसे फ़क़ीर अमीर के दरवाज़े पर सदा लगाते वक़्त उस की जान व माल की दुआ़एं देता है ताकि भीक मिले, हम भिकारी हैं, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) दाता, इन्हें दुआ़एं देना, मांगने खाने का ढंग है।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हदीसे पाक के इस हिस्से **"जो मेरे लिये वसीला मांगे उस पर मेरी शफ़ाअ़त लाज़िम है"** के तहत फ़रमाते हैं : या'नी मैं वा'दा करता हूं कि उस की शफ़ाअ़त ज़रूर करूंगा। यहां शफ़ाअ़त से ख़ास शफ़ाअ़त मुराद है, वरना हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हर मोमिन के शफ़ीअ़ हैं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त बहुत क़िस्म की है। शफ़ाअ़त की पूरी बह़्स और इस की क़िस्में हमारी किताब **"तफ़्सीरे नईमी"** जिल्द सिवुम में देखो।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 411)

www.dawateislami.net

हिकायत : 16

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक साहिब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजू-दगी में (ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद) फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह तआ़ला** ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग मु-तअ़ज्जिब हुए क्यूं कि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के घर गए और उन की बेवा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह **अज़ान** सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे।

(تاریخ دِمشق لابن عَساکِر ج ٤٠ ص ٤١٢، ٤١٣ مُلَخَّصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गु-नहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाखों से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ुव्व तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ماخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
تفسیر خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	المطبعۃ المیمنیۃ، مصر ۱۳۱۷ھ
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مسند احمد	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
مؤطا امام مالک	امام مالک بن انس، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مصنف ابن ابی شیبۃ	حافظ عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن الدارمی	امام حافظ عبداللہ بن عبدالرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
مسند البزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبدالخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ۱۴۲۴ھ
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث، بیروت ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
الموسوعۃ لابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
مسند الفردوس	الحافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ الدیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
تاریخ دمشق	علامہ علی بن حسن المعروف بابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۴ھ
مسند ابی یعلی	شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
حلیۃ الاولیاء	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
نزہۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	فرید بک اسٹال، لاہور
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
دلیل الفالحین	محمد علی بن محمد علان شافعی، متوفی ۱۰۵۷ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۳۱ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
سعادۃ الدارین	شیخ یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

الزواجر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
البدایۃ والنہایۃ	اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شامی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
سیرت ابن جوزی	امام ابوالفرج عبدالرحمن ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۴ھ
عیون الاخبار	ابومحمد عبداللہ بن مسلم بن قتیبہ دینوری، متوفی ۲۷۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
ترتیب المدارک	قاضی عیاض بن موسیٰ، متوفی ۵۴۴ھ	مطبعۃ فضالۃ المحمدیۃ، المغرب
شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
مختصر منہاج القاصدین	احمد بن عبدالرحمن بن محمد مقدسی صالحی، متوفی ۶۸۹ھ	دار احیاء العلوم، بیروت ۱۴۱۸ھ
تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
ادب الدنیا والدین	ابوالحسن علی بن محمد بصری ماوردی، متوفی ۴۵۰ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۸ھ
رشفۃُ الصّادی	ابوبکر شہاب الدین علوی حضرمی	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
بحر الدموع	امام ابوالفرج عبدالرحمن ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبہ دار الفجر دمشق ۱۴۲۴ھ
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفی ۸۵۰ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
الحدیقۃ الندیۃ	سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۱ھ	پشاور
الفقیہ والمتفقہ	ابوبکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۲ھ	دار ابن الجوزی، ۱۴۲۸ھ
فتاوی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۸ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
وسائل بخشش	امیر اہل سنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری، دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	1	इ़ल्म सीखने के लिये	
दीदार कैसे होगा ? (ह़िकायत)	2	छ[6] ज़रूरी चीज़ें	12
मक़ामे रसूल	3	ज़मीन व आस्मान वाले इस्तिग़्फ़ार करते हैं	13
शाने रसूल के बारे में 5 आयाते मुबा-रका	3	जन्नत में मेरे साथ होगा	13
दुन्या को पैदा न करता	4	सुन्नत को ज़िन्दा करने का मत़लब	14
सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे !	5	कीने की ता'रीफ़	14
सोह़बत व कुर्बत के मुश्ताक़ रहते	5	कीने का हुक्म	15
इ़मारत गिरा दी (ह़िकायत)	6	मोमिन कीना परवर नहीं होता	15
काएनात की बेहतरीन ख़ुश्बू म-दनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	7	मुसा-फ़ह़ा किया करो कीना दूर होगा	15
की इ़नायतें	8	लोगों में अफ़्ज़ल तरीन कौन ?	16
ख़ुश ख़बरी	9	सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा	16
आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म मुझ से हैं	10	दूर ही से शराइत़ दिखाने वाला नोकर (ह़िकायत)	16
पांचवां न बन कि हलाक हो जाएगा	10	क़ियामत में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कुर्ब मिले	17
इ़ल्म शराफ़त व मर्तबे की कुन्जी है (ह़िकायत)	11	नजात का परवाना (ह़िकायत)	18
गुनाहों का कफ़्फ़ारा	11	बच्चियों की परवरिश करने की फ़ज़ीलत	19
इ़ल्म क़ब्र में सुकून पहुंचाएगा	12	जन्नत में यूं होंगे	20

www.dawateislami.net

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
ख़ाला, फूफी वग़ैरा की कफ़ालत की फ़ज़ीलत	21	नेक लोगों की बुराइयां करना ग़ीबत हो जाने पर	28
यतीम बच्चों की कफ़ालत का सवाब	21	खुद को सज़ा देते	28
यतीम की कफ़ालत करने का इन्आ़म	22	अहले बैत से मह़ब्बत करने की फ़ज़ीलत	28
यतीम के सर पर हाथ फैरने की फ़ज़ीलत	22	अल्लाह की रिज़ा के लिये मह़ब्बत	29
वोह जन्नत में मेरा साथी या पड़ोसी होगा	23	क़ुरआन और अहले बैत की मह़ब्बत	29
दिल की सख़्ती दूर होती है	23	अहले क़राबत से मुराद कौन हैं ?	30
यतीम की ता'रीफ़	23	सादात से हुस्ने सुलूक की फ़ज़ीलत	31
सायए अ़र्श नसीब होगा	24	बिग़ैर ह़ज किये ह़ाजी (ह़िकायत)	31
वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया (ह़िकायत)	24	जिस ने मेरी पैरवी की वोह मुझ से है	36
सब से पसन्दीदा घर	25	तू उसी के साथ होगा	
यतीम से हुस्ने सुलूक की सूरतें	25	जिस से मह़ब्बत है	36
शैत़ान दस्तर ख़्वान के क़रीब न आए	25	खुश अख़्लाक़ की खुश नसीबी	39
बाल-बच्चे वाले		हुस्ने अख़्लाक़ से क्या मुराद है ?	39
नेक आदमी की फ़ज़ीलत	25	हुस्ने अख़्लाक़ किसे कहते हैं ?	40
तुम्हारी दुआ़ अफ़्ज़ल है (ह़िकायत)	26	बद अख़्लाक़ी की दो अ़लामतें	40
मिस्कीन मां का बच्चियों पर ईसार (ह़िकायत)	26	अच्छे अख़्लाक़ की ब-र-कत	41
ग़ीबत न करने वाले को जन्नत की ज़मानत	27	तुम आज़ाद हो (ह़िकायत)	41
मुसल्मान भाई न बचा (ह़िकायत)	27	मैं नशे के इन्जेक्शन लगाता था ह़-रमैने त़य्यिबैन में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत	42
			43

www.dawateislami.net

उ़न्वान	स.	उ़न्वान	स.
मदीने में मरने की फ़ज़ीलत	44	वोह दवा जिस के सबब	
मदीनए मुनव्वरह में		कोई मरज़ न हो (ह़िकायत)	50
शहादत की दुआ़	46	कहीं मैं भूकों को भूल न जाऊं !	51
शहादत नसीब होगी	46	ज़ियादा गुफ़्त-गू बाइ़से हलाकत है	52
मदीनए त़य्यिबा की सख़्ती व		लोहे का दरवाज़ा हो	52
तंगी पर सब्र का इन्आ़म	47	क्या तुम ने कोई बात भी की है ?	
सब्र करो और ख़ुश हो जाओ	48	(ह़िकायत)	52
यतीम बच्चों की		अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो	53
परवरिश करने वाली मां	48	तू ने कोई फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू की है	53
तुम जन्नत में मेरे साथ होगे	49	उस पर मेरी शफ़ाअ़त लाज़िम है	53
ज़ियादा खाने से आदमी		अज़ान का जवाब देने वाला	
बीमार होता है	50	जन्नती हो गया (ह़िकायत)	56
खाना हज़्म करने वाली		मआख़िज़ो मराजेअ़	57
दवा का तोह़फ़ा (ह़िकायत)	50		

www.dawateislami.net

Nasihaton Ke Madani Phool (Hindi)

اَلْمَوَاعِظُ فِي الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّةِ

तरजमा बनाम

नसीहतों के म-दनी फूल

ब वसीलए अहादीसे रसूल

मुअल्लिफ़ : हुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عليه رحمة الله الوالي

अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुम्आ़रात बा'द नमाज़े इ़शा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل" अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

ISBN
0133046

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net